

पद ३३५

(राग: झिंजोटी - ताल: दीपचंदी)

इस वजूद को झूठा जान लेव । देखो देखो तुम्हीं में तुम हो ।
तुमको तो तुमने भुल गयो । मैं वजूद कहके कूद रहे । ये वजूदसे
तुम अलग रहो । थोड़े में समझा देऊं मैं ये बात मानो मेरी सही ।
दुनियाको सपना जान लेव । पैदा तो तुम हुए नहीं । कजा तो
तुमकु आवे नहि । मानिक कहे तुम मस्त रहो ॥१॥